पद्मावती ने हमारे अन्दर भी तलवारें खींच दी हैं

- रवीन्द्र पटवाल

पद्मावती पर संजय लीला भंसाली की फिल्म काफी समय से बन रही है। हर जगह कुछ प्रभुत्वशाली समाज के लोग होते ही हैं। करणी सेना जैसे 20 लाख संगठन इस देश में होंगे। जो समय समय पर पूजा हवन, फ़तवा देते रहते हैं। और मौके बेमौके चुनाव के जरिये राजनैतिक पार्टियों के हित साधते हैं और प्रेशर ग्रुप बना उसके नेता अपना व्यक्तिगत हित साधन करते हैं, इससे ज्यादा कुछ नहीं।

अब मुद्दा इससे आगे बढ़ता है। मेरा मानना है कि संजय लीला भंसाली एक ऐतिहासिक मुद्दे पर भव्य फिल्म बनाने के लिए मशहूर हैं। फिल्म उनकी भव्य, लोकपरंपरा से परिचित कराती हैं। सब कुछ इतना भव्य होता है कि आप मंत्रमुग्ध फिल्म देखकर लौटते हैं तो आपके पास इतिहास का भी एक छोटा कोना बेहतर समझ के साथ आ जाता है।

पर इससे आगे संजय लीला भंसाली कुछ नहीं देते। वे तब भी कुछ नहीं बोलते जब करनी सेना कुछ भी नहीं थी, और राजस्थान के सेट पर जाकर उसके लोग उन्हें थप्पड़ जड़ देते हैं। फिल्म इंडस्ट्री ने इसका विरोध किया। हमने भी किया. पर अपनी व्यावसायिक मज़बूरी के चलते भंसाली इसपर कोई विरोध कारगर नहीं करते, ना फिल्म इंडस्ट्री करती है।

उसके कुछ माह बाद ही खबर आई कि पुणे के पास सेट पर भी आग लगाई जाती है, और कई करोड़ों का सेट पर आग लगा दी जाती है। इसे भी भंसाली खा पचा हजम कर जाते हैं। कुछ दिन के हंगामे के बाद करनी सेना फिर से गुम हो जाती है।

अब इधर एक महीने से उसकी सरगर्मी बढ़ जाती है। फिर बड़ी जल्दी जल्दी करनी सेना को मीडिया के जरिये घर घर मान सम्मान की, आन बाण शान की लड़ाई के लिए लड़ता दिखाया जाता है। वे धमकी देते हैं सर कलम करने की और दीपिका की नाक काटने की।

ध्यान से देखता हूँ तो इस सब कंट्रोवरसी पर सबकी मौज है। जगह जगह बीजेपी के स्थानीय नेता, प्रदेश के मंत्री बयान देते हैं। उमा भारती जिनके पास गंगा की सफाई का जिम्मा 3 साल था, और उन्होंने कसम खाई थी कि गंगा साफ़ नहीं हुई तो वे पता नहीं क्या कर लेंगी। गंगा और भी दूषित होती गई, पर उन्हें भी इसपर बोलने का इतना मौका पद्मावती फिल्म ने दे दिया, जितना वो 3 साल के कार्यकाल में गंगा माँ पर न बोल पाई होंगी।

इसके बाद मीडिया का सवाल आता है. मीडिया प्रश्न भी पूछता है, और आग में घी डालने का काम भी कर रहा है। मीडिया घोर शर्मिंदा था कि उसने भात और भूख से मरते झारखण्ड को नहीं दिखाया। दिल्ली में 3 दिन देश भर से आये मजदूरों, आशा वर्कर्स, आंगनबाड़ी कार्यकर्तृता जो लाखों की संख्या में आये थे और अपने 1000-1250 रूपये मासिक वेतन को 15-18000 करने की मांग कर रहे थे को नहीं दिखाया।

सरकार भी परेशान थी, paradisedeal फिर से भूत बनकर उनके सर पर खड़ा था, नोटबंदी के एक साल पर देश सुलग रहा था, जवाब देते नहीं बन रहा था। और यहाँ तक कि इसी बीच राफेल जेट की खरीद पर जो बताया जा रहा है कि मनमोहन सरकार से तीन गुना ज्यादा दाम पर डील की गई है, सरकार से कोई जवाब नहीं मांग रहा है।

इस तरह सरकार और मीडिया को बचाता हुआ मुद्दा पद्मावती फिल्म आज बन गई है। अब कुछ महान प्रगतिशील मित्र इस बात पर अड़ गए कि नहीं हमें अभिव्यक्ति के खतरे तो उठाने ही होंगे। आज ही तोड़ने होंगे मठ और गढ़। और संजय लीला भंसाली या कोई भी हो वो जो दिखाना चाहते हैं उन्हें संविधान ने आजादी दे राखी है, इसलिए करनी सेना के खिलाफ हमें मुहंतोड़ जवाब देना ही चाहिए। हमें पूरी तरह से भंसाली का समर्थन करना चाहिए। और जो यह नहीं कर रहा है, वह कहीं न कहीं करनी सेना के पक्ष में है। उसके पूरी प्रतिबद्धता संदेह के घेरे में है। जातीय अंश भी ढूंढे जा रहे हैं।

वह दृश्य कितना भयानक, दर्दनाक, रोंगटे खड़े कर देने वाला और दिल दहला देने वाला रहा होगा, जब एक बड़ी सी जगह पर आग दहकाई गई होगी, और पद्मावती और कई हजार अन्य राजपूत स्त्रियाँ उस आग में जलकर मरने के लिए कूदी होंगी। कितनी ही स्त्रियाँ अपने मासूम बच्चों को छोड़कर आई होंगी। हमारा जरा सा हाथ जल जाता है, तो दर्द से बिलबिला जाते हैं, वहाँ उन्होंने जानबूझकर अपने आप को जलाकर मारा। राजपूत कुछ भी कहें, लेकिन यह जुल्म था। एक चींटी तक मरना नहीं चाहती, हर प्राणी जीना चाहता है। वे कैसे मरने को तैयार हुई होंगी ? यह बर्बर प्रथा थी ? एक सामूहिक कत्ल था, जो जौहर के नाम की बर्बर छुरी ने किया था. उफ़ हमने धर्म और मर्यादा के नाम पर स्त्री के लिए कितनी बर्बर्ताएं स्थापित की थीं।

- कँवल भारती

ऐसे मित्रों से क्या कहूँ?

ऐसे मित्र मुझे पोस्टर बाज नजर आते रहे हैं सदा से।

वो चाहे केरल में बीफ उत्सव मनाते हों, या किस ऑफ़ लव उत्सव। ये लोग दरअसल सिक्के के दुसरे पहलू के रूप में काम करते हैं। इन्हें समस्या की जड़ पर प्रहार नहीं करना है। इन्हें तो चाहिए कि ऐसे मुद्दे आते रहें। ताकि उनको उसके विरोध का सुअवसर मिलता रहे।

मेरी समझ में, करणी सेना सिर्फ बाई प्रोडक्ट है। समाज में अपने जाति श्रेष्टता बोध को बचाए रखने के सिवाय कुछ बचा नहीं है। भयंकर बेरोजगारी, बेहाल अर्थव्यवस्था ने न सिर्फ समाज के बेस को बुरी तरह हिलाया हुआ है, बल्कि उजले कपडे पहने मध्यवर्ग और तथाकथित उच्च जातियों के दम्भ को भी मटियामेट किया हुआ है। आज राजपूत या ठाकुर समुदाय को अपने इस समस्या का हल अगर कोई अपने जातीय अभिमान को उठाने पर सुकून मिलता है, तो यह गलती मैं उसकी कम मानता हूँ। वे तो खुद विक्टिम हैं सिस्टम के। वे खुद नहीं कर रहे, ये सब करवाया जा रहा है। जो करा रहे हैं, वे अगर इसका 100 गुना खर्च कर भी खुद करते तो उन्हें वो अपेक्षित लाभ न मिलता जो आज पद्मावती या भंसाली करा रहे हैं।

पद्मावती आज जब सबको पता है कि मलिक मोहम्मद जायसी की एक काव्यात्मक कालजयी रचना से ज्यादा कुछ नहीं। इस बात को आरएसएस के चिंतक राकेश सिन्हा तक ने टीवी टुडे में बहस में स्वीकारा, तो इस पर आज 600 साल बाद बहस और लड़ाई क्यों ? क्योंकि गुजरात हार सकती है बीजेपी।

और गुजरात की हार का मतलब 2019 से भी बड़ा नजर आता है कई राजनैतिक पंडितों को। इसलिए जहाँ एक तरफ सेक्स पृष्ठ का भरोसा है, वहीँ दूसरी तरफ अनचाहे ही संजय लीला की लीला उससे कहीं ज्यादा मुफीद साबित होने जा रही है।

देश 70 साल से ठगा जा रहा है, एक बार और सही।

शार्क का मानवीय व्यवहार

मकान मालकिन की छोटी लड़की ने महाशय से पुछा अगर शार्क आदमी होते तो क्या छोटी मछलियों के साथ उनका व्यवहार सभ्य-शालीन होता ?

उन्होंने कहा- निश्चय ही, अगर शार्क आदमी होते तो वे छोटी मछलियों के लिए समुद्र में विशाल बक्से बनवाते, जिसके भीतर हर तरह के भोजन होते, तरकारी और मांस दोनों ही। वे इस बात का ध्यान रखते कि बक्सों में साफ पानी रहे और आम तौर पर वे हर तरह की स्वच्छता का इंतजाम करते। उदाहरण के लिए अगर किसी छोटी मछली का पंख चोटिल हो जाता तो तुरन्त उसकी पट्टी की जाती, ताकि वह मर न जाये और समय से पहले वह शार्क के लिए गायब न हो जाये। छोटी मछलियाँ उदास न हों इसलिए समय-समय पर विराट जल महोत्सव होता, क्योंकि प्रसन्नचित्त मछलियाँ उदास मछलियों से ज्यादा स्वादिष्ट होती हैं। निश्चय ही, बड़े बक्सों में स्कूल भी होते। उन स्कूलों में छोटी मछलियाँ यह सिखतीं कि शार्क के जबड़ों में कैसे तैरा जाता है। भूगोल जानना भी जरूरी होता, ताकि उदहारण के लिए, वे उन बड़े शार्कों को खोज सकें जो किसी जगह सुस्त पड़े हों। छोटी मछलियों के लिए प्रमुख विषय निश्चय ही नैतिक शिक्षा होता। उनको सिखाया जाता की दुनिया में यह सबसे अच्छी और बेहद सुन्दर बात होगी अगर कोई छोटी मछली खुशी-खुशी अपने को कुर्बान करे और यह कि उन सबको शार्कों पर भरोसा रखना होगा, खासकर तब जब वे कहें कि वे उनके लिए सुन्दर भविष्य मुहैया कर रहे हैं।

छोटी मछलियों को पढ़ाया जाता कि यह भविष्य तभी सुनिश्चित होगा जब वे आज्ञाकारी बनना सीख जायें। छोटी मछलियों को सभी घटिया, भौतिकवादी, स्वार्थपरक और मार्क्सवादी रुझानों सावधान रहना होता और अगर उनमें से कोई दगाबाजी करके इन बातों में दिलचस्पी लेती तो तुरन्त इसकी सूचना शार्कों को देनी होती।

अगर शार्क आदमी होते तो निश्चय ही वे एक दूसरे के खिलाफ युद्ध छेड़ते, ताकि दूसरे मछली बक्सों और दूसरी छोटी मछलियों को जीत सकें। युद्ध उनकी अपनी छोटी मछलियों द्वारा लड़ा जाता। वे अपनी छोटी मछलियों को सिखाते कि उनमें और दूसरे शार्कों की छोटी मछलियों के बीच भरी अन्तर है। वे घोषणा करते कि छोटी मछली चुप रहने के लिए सुविख्यात हैं, लेकिन वे बिलकुल अलग भाषाओं में चुप हैं और इसलिए एक दूसरे को समझ पाना उनके लिए असंभव होता है। हर छोटी मछली जो युद्ध में एक जोड़ी छोटी मछली, यानी अपने दुश्मन की हत्या करती उसे समुद्री शैवाल टाँका हुआ तमगा मिलता और उसको नायक की उपाधि से विभूषित किया जाता।

अगर शार्क आदमी होते तो निश्चय ही कला भी होती। सुन्दर-सुन्दर तस्वीरें होतीं जिनमें शार्क की दाँतों को शानदार रंगों में चित्रित किया गया होता और उनके जबड़ों को निर्मल विहार उपवन के रूप में दर्शाया जाता जिसमें कोई भी शान से विचरण कर पाता। समुद्र की तलहटी में थियेटर यह दिखाता कि कैसे बहादुर छोटी मछलियाँ उत्साहपूर्वक शार्क के जबड़े में तैर रही हैं और संगीत इतना सुन्दर होता कि वह उनके सुर में सुर मिलाता रहता, आर्केस्ट्रा उनको प्रोत्साहित करता और अत्यंत मनोहर विचारों से श्लथ, छोटी मछलियाँ स्वप्निल बहाव के साथ शार्क के जबड़े में समातीं। एक धर्म भी होता अगर शार्क आदमी होते। वह उपदेश देता कि छोटी मछली वास्तव में केवल शार्कों के उदर में ही समुचित रूप से जीना शुरू करती हैं। **इसके आलावा, अगर शार्क आदमी होते तो सभी छोटी मछलियों की बराबरी का दर्जा ख़त्म हो जाता, जैसा कि आजकल है। कुछ को महत्वपूर्ण पद दिये जाते और उनको बाकी सब से ऊँचा स्थान दिया जाता। जो थोड़ी बड़ी होतीं उन्हें अपने से छोटी मछलियों को खाने की भी इजाजत होती। शार्कों की इस बात पर पूरी सहमति होती क्योंकि उनको भी तो समय-समय पर थोडा बड़ा निवाला खाने को मिलता। और हाँ, जो छोटी मछलियाँ थोड़े बड़े आकार की होतीं वे अपने पदों पर काबिज होकर बाकी छोटी मछलियों के बीच व्यवस्था कायम करतीं। वे शिक्षक, अफसर, बक्सा निर्माण इंजीनियर इत्यादि हो जातीं। थोड़े शब्दों में, अगर शार्क आदमी होते तो पहली बार वे समुद्र के भीतर संस्कृति ले आते।**

बर्तोल्त ब्रेख्त (अनुवाद -दिगम्बर)

पेड़ से टपका एक पुराना चुनावी सर्वे...

अन्ना हजारे अगले महीने से देश भर को जगाने निकल रहे हैं। वो ट्रेन से ये काम करेंग..आडवाणी जी भी अपनी सर्वप्रिय रथयात्रा का ऐलान कर ही चुके हैं, जिसका मुद्दा है अगले चुनाव में जीत और पिछले चुनाव में पार्टी की दुर्गति.....

पर उनके दु:ख को दूना कर गया नरेन्द्र मोदी का उपवास....उनका बरसों-बरसों पुराना दिल ही जानता है जब वो अनशन तोड़ने को मोदी के मुहं के पास शरबत का गिलास थामे खड़े थे ..... इधर.. मनमोहन सिंह का मुंह दांत का डॉक्टर भी नहीं खुलवा पा रहा ....सोनिया गाँधी और राहुल खामोश हैं.....वामपंथी अपनी पिछली जेब से मार्क्स की तस्वीर निकाल कर निहार रहे हैं....और बाकी पार्टियों का काम भोर के वक्त रंभाने और बाकी समय जुगाली करने भर रह गया है। कुल मिला कर देश की तस्वीर तालाब के किनारे बैठे किसी मछली पकड़ने वाले की सी बनी हुई है।

ऐसे में पेड़ की दो डालों के बीच टिके बर्बरीक वल्द घटोत्कच वल्द भीमसेन को कुछ करने की सूझी। वक्त का पता नहीं....कुछ अंधेरा है कुछ उजाला है...शाम भी हो सकती है..... भोर भी ...क्योंकि इन्हीं दोनों समय सामने के बदबू मारते तालाब के किनारे कतार में लोटा बगल में रख कर प्राकृतिक क्रिया, सामाजिक धर्म और राष्ट्रीय कर्तव्य निपटाए जाते हैं। बर्बरीक ने नजर डाली तो तो पेड़ की शाखें लदी हुई थीं। 25 गौरेया, 28 तोते, 5 कौवे, आठ गिरगिटान, 13 गिलहरी, दो गिद्ध, चार उल्लू, दो कठफोड़वा, सात बंदर और मकड़ियों समेत कीड़े-मकोड़ों की कई प्रजातियां वहां मौजूद थीं। सब आपस में बात कर रहे हैं कि आडवाणी जी को फिर फीलगुड जैसा कुछ हो रहा ह क्या .....बर्बरीक उर्फ बॉब ने गुर्रा कर उनकी चिल्लपों शांत करवाई।

आज मैं एक मसले पर आप लोगों की राय जानना चाहता हूं। हमारे देश में चैन की बंसी भी बज रही है और तुरही भी, ऐसे में आपको क्या फील हो रहा है.....गौरेयाओं.....पहले आप बात बताएं। आप लोगों से छेड़छाड़ तो नहीं की जाती....अश्लील फिकरे तो नहीं कसे जाते.....जब नर कहीं चला जाता है तो घोंसले में डर तो नहीं लगता....थोड़े में बताएं....गौरेया घबरा कर एक-दूसरे की तरफ देखने लगीं...फिर कनखियों से कौवों को देखा और नजरें झुका लीं....

बॉब ने फिर कहा..घबराएं नहीं...खुल कर अपनी बात कहें .....हिम्मत बटोर कर एक ने कहा...हमारे घोंसले के सामने बैठ अमरमणि त्रिपाठी की तरह दांत निकालते हैं मुए ..तुरंत कौवों ने कुदक्कड़ी मारी....और तुम जो हमें देख मलाइका की तरह ठुमकती हो....एक कौवा भन्ना कर बोला.....

त्रिपाठी जी का नाम आते ही बर्बरीक ने तुरंत मामले को मोड़ दिया ....हमारे बीच मौजूद गिरगिटान कुछ बोलें। एक ने अपने को चटपट हरे से लाल किया-हम किन लफ्जों में अपना दुखड़ा सुनाएं ? हम इन नेताओं की रंग बदलने की रफ्तार देख अपना रंग बदलना भूल चुके हैं। रंग बदलना ही हमारी पहचान थी...हमारी विरासत थी...जो आज परायी हो गयी है। हम समझ नहीं पा रहे कि हम कितने और कौन कौन से रंग बदलें। वो कुछ और बोलता, बर्बरीक ने घुड़क दिया.....

इस बार बर्बरीक तोतों को मौका दिया...आप कुछ बताइये...हम तो जी बरबाद हो गये। हमको अपनी जिस तोताश्मी पर नाज था, उसको भी वो हजम कर गये। हमारे पास अपना कहने को अब बचा ही क्या है। हमें तो कोई ज़हर दे दे.....

गिद्धों...अब आप बताओ.....हमारी पहचान इसलिये ही तो है न कि हम जीव-जन्तुओ की सड़ी-गली लाशें खा कर महामारियों से इनसान का बचाव करते हैं। इसके लिये हमारे पंजों और इस मुड़ी हुई चोंच को दाद दी जाती है। लेकिन इन दोनों को अब चिरकुटों ने पेटेंट करा लिया है। अरे...हम तो मरे हुओं को नोचते थे...ये कमबख्त तो जिन्दों को बगैर नोचे भकोस लेते हैं...अब हम जामुन खा कर गुजारा कर रहे हैं....यह कहते कहते उनकी आंखों में आंसू आ गये।

माहौल की नजाकत को देख बर्बरीक ने उल्लुओं को आवाज मारी.....आप भी कुछ कहें....सर जी, हमारा दर्द तो इन सबसे बड़ा है...हम उस शायर को याद करते हैं, जिसने हम पर यह शेर लिख कर हम पर करम फरमाया था.....पूरे पेड़ ने आवाज निकाली...इर्शाआआआआआआआद ...एक उल्लू ने दूसरे को कोहनी मारी...तू गा के सुना.....

बरबाद-ए-गुलिस्तां करने को बस एक ही उल्लू..... गाते गाते वो सिसकियां भरने लगा। एक बुजुर्गवार उल्लू बोले....हमारी यह जेनरेशन फ्रेस्ट्रेशन में जी रही है सर जी ...क्या बोलें साहब....सन 47 के बाद ऐसे दिन देखने को नसीब होंगे, सपने में भी नहीं सोचा था.....हमारी पौराणिक मनहूसियत पर तो जैसे डाका पड़ गया है। उसका जगह जगह फूहड़ प्रदर्शन किया जा रहा है। अब हमारा ये हाल है कि

कहां जा के मौत को ढूंढिये
कहां जान अपनी गंवाइये

एकाएक बंदरों ने तालियां बजाते हुए नाचना शुरू कर दिया। बर्बरीक बौखला कर पूछा ---ये क्या कर रहे हो नदीदों ....हे हे ही ही.....किसी के घर से उठायी चुनरी पहन कर फुदक रही बंदरिया बोली... कुछ नहीं सर जी, ये सब इसलिये दुखी हैं कि नेता बिरादरी इनकी नकल कर रही है, लेकिन हम उनकी नकल कर मस्तिया रहे हैं। एक बंदर ने सिर पे साफा बांधा और उस बंदरिया के गले में बाहें डाल लचकना शुरू कर दिया...बाकी बंदर शुरू हो गये.....जीतेगा भाई जीतेगा हमारा कड़ियल जीतेगा..

राजीव मित्तल